भोजपुरी लोक साहित्य एवं संस्कृति

बच्चों के खेल- गीत

शहरी और ग्रामीण सांस्कृतिक चेतना में आज भी दूर के सम्बन्ध दिखाई पड़ते हैं। कारण स्पष्ट है, पाश्चात्य संस्कृति का जितना प्रभाव शहरों पर है, उतना ग्रामीण जन-जीवन पर नहीं। वस्तुतः शहरी और ग्राम्य जीवन में वही अंतर है जो हमें विज्ञान और साहित्य में मिलता है। ग्राम्य संस्कृति यदि हृदय प्रधान है तो शहरी संस्कृति बुद्धिप्रधान। यही कारण है कि ग्राम्य जीवन में प्रचलित खेल-गीतों के साथ मनोहारिता एवं भावनात्मकता लिपटी हुई है। इन खेलों के साथ गीत शब्द का जुड़ जाना ही इस बात का द्योतक है कि ग्राम्य जीवन में अनुराग है, रसात्मकता है। शहरी खेलों के साथ गीत नहीं मिलते, फलतः जो सरसता और आकर्षण ग्रामीण खेलों में उपलब्ध है, उसका शहरी खेलों में प्रायः अभाव पाया जाता है।

ग्रामीण जीवन में प्रचलित खेलों के साथ परम्परागत रीति-रिवाज, लोकोक्तियाँ एवं लोक-कथाएँ भी सुरक्षित हैं। उनमें ग्राम्य वातावरण के प्राकृतिक, सामाजिक, राजनैतिक, आर्थिक एवं धार्मिक आदि हर तरह के चित्र मिलते हैं। शहरी जीवन बहुत कुछ समय के साथ गतिशील है, ग्राम्य जीवन अपनी परम्परागत विरासत को संजोये प्रगति पथ पर आरुढ़ है। भोजपुरी क्षेत्र (जिला, सारण, गोपालगंज) में ग्रामीण शब्दों एवं पद्बन्धों के संग्रह करने के सिलसिले मे हमने पाया कि हमउम्र के लोग जो-जो खेल खेले थे या तत्सम्बन्धी गीत गाए थे उनमें से अधिकांश आज के बच्चों के लिए अज्ञात हो चुके हैं। उन खेल-गीतों के जरिए समाज के बदलते क्रिया-कलापों के स्तर की पहचान की जा सकती है।

गीत गाने या अनुकरण करने की प्रवृत्ति के कारण खेल खेलते समय अनायास तुक मिलाकर अपने पसन्द के गीत गढ़ लेना बच्चों के लिए उनके बुद्धि-चातुर्य के ही द्योतक हैं। भले ही उनके सभी गीतों से कोई सार्थक मतलब न निकलते हों, पर उन गीतों के द्वारा मनोवैज्ञानिक अनुसंधाता बच्चों के बुद्धि या मानसिक स्तर और उन बच्चों के सामाजिक तथा पारिवारिक रहन-सहन एवं मान्यताओं का पता लगा सकते हैं। बच्चों के बहुत से खेल-गीतों के बनने के पीछे कोई न कोई घटना अवश्य घटित हुई रहती है।

स्तरीकरण :

तीन वर्ष तक के बच्चे न तो गीत गा सकते हैं और न बना ही सकते हैं, अतः उन्हें खेलाते, खिलाते या सुलाते समय बहनें, मातायें या दादियाँ जो गीत गाती हैं, उनमें घुघुआ, चिड़िया गीत, चिलरी गीत, मामा या चन्दामामा गीत, हँसुआ गीत, भैयागीत, मछरी गीत, कुम्हड़ा गीत आदि आते हैं। तीन वर्ष से सात-आठ वर्ष तक के बच्चे आपस में एक जगह बैठकर जो गीत गाते हैं, उनमें ओका-बोका, अटकन-चटकन, चिंउटी गीत, पैर का अँगूठा पकड़ कर गाने वाला गीत आदि आते हैं। दस वर्ष से सोलह वर्ष तक के किशोर/किशोरियों के खेल सम्बन्धी गीत में वर्षा गीत, कबड्डी गीत, उदुक-बुदुक, म्याऊँम्याऊँ, गोइयांबरे गीत तथा शपथ धराने, हास्य व्यंग्य करने या चिढ़ाने सम्बन्धी पदबन्ध प्राप्त होते हैं।

शिशु गीत :

घुघुआ (कनछेद)
घुघुआ मामा, उपज गइल धाना
एहि पड़े अइले, बबुआ के मामा
कनवा छेदा देहले, बलवा लगा देहले
दूनों हाथे लड्डुआ धरा देहले
सम्हरिहे बुढ़िया सम्हरिये

Content given by BHU, Varanasi
Copyright © Banaras Hindu University- All rights reserved. No part of this may be reproduced or transmitted in any form or by any means, electronic or mechanical, including photocopy, recording or by any information storage and retrieval system, without prior permission in writing.

भोजपुरी लोक साहित्य एवं संस्कृति

बबुआ गिरेला धबाक् ।

बच्चे पर किसी की नजर न लग जाए, इसके लिए सामाजिक मान्यता के अनुसार बच्चे के मामा, बच्चे का कर्णछेदन कराते हैं। इसी विश्वास पर आधारित इस गीत को सुनाते हुए बच्चों को घुघुआ खेलाया जाता है। कर्णछेदन के बाद घाव की पीड़ा से व्यथित बच्चे को चुप कराने के लिए मामा ने उसके हाथ में दो लड्डू थमा दिया।

घुघुआ मनेर साढ़े तीन कनवा तेल
ओहू में आधा बहिये गेल
घुघुआ के बहाने इस गीत में तेल की मात्रा एवं उसमें से आधा गिर जाने का दुःख भी प्रदर्शित है।
चना मुठी कउड़ी गम्भार, आपन बाल बच्चा सम्हार।

चुप कराने का गीतः

हाल-हाल बबुआ कुरई में ढेबुआ
बाबू अइले खेल के, रोटी पकवले बेल के,
रोटी भइल कॉचे, बाबू लगले नाचे।

माँ जब रोटी बनाती है तो शिशु भी माँ के पास बैठकर गूँथे हुए आटे से थोड़ा नोचकर माँ का अनुकरण करते हुए उससे रोटी का शक्ल देने लगते हैं, या चिड़िया बनाते हैं। माँ प्यार से शिशु द्वारा बनाये चिड़िये या रोटी को तावे पर सेंकती है, जब वह कच्चा रह जाता है तो बच्चा रोने लगता है। इस कहानी को सुनाकर बच्चे को चुप कराया जाता है।

बच्चा जब चुप नहीं होता, तब उसको भरमाने के लिए कभी-कभी पैसा भी दिया जाता है। पहले जब तमहा पैसा चलता था, शायद तभी से यह कहावत प्रचलित हुई-''लाल-लाल पैसा त रूदन कैसा?''

जाड़ें के दिन में सुबह धूप में बैठकर दादी माँ शिशु को खेलाते हुए कहती हैं ः
रामजी रामजी घाम करीं, सुगवा सलाम करीं,
तहरो बलकवा के जड़वत बा, पुअरा फूंक फूंक तापत बा।

सुलाने का गीत :

१. आव रे निनिया निनान बन से, बाबू आवेले मामा कीहाँ से,
खटिया गेनर पटना से, सुति रह बाबू अपने से। (गेनरउगुदरा)

२. सुत-सुत बबुआ कुरई में ढेबुआ,
बाप गइले नोकरी मातारी असगरूआ, (असगरूआउअकेला)
आजा आजी चनन के, पितिया सहोदर के
मय खिलौना चानी के
बबुआ रे तू कथिके? (कथिके उ किस चीज का)
अनन चनन कस्तुरी के।

३. सुत-सुत बबुआ, कनकटवा आवऽता

Content given by BHU, Varanasi
Copyright © Banaras Hindu University- All rights reserved. No part of this may be reproduced or transmitted in any form or by any means, electronic or mechanical, including photocopy, recording or by any information storage and retrieval system, without prior permission in writing.

भोजपुरी लोक साहित्य एवं संस्कृति

माई -बाप गइले धान काटे
साँझी बेर अइहें, त भर अँगना
दुधवा पिअइहें साढ़े तीन ढकना।

कान काटने वाले का भय दिखाकर बच्चे को चुप कराया जा रहा है। यहाँ माता-पिता के कृषक जीवन का भी बोध कराया गया है। बच्चा माँ के दूध के लिए रो रहा है, बहन समझा रही है कि अन्न पैदा करना भी आवश्यक है। जब वे धान्न काटकर लायेंगे तो आँगन भर जायेगा, फिर माँ उसे भरपेट दूध पिलायेगी।

४. आव रे निनिया निनार बन से, बाबू आवे मामा घर से।
माई खोजे आरी-बारी, बाप खोजे फुलवारी।
बबुआ बाटे बाबा के चौपारी में,
खटिया आइ पटना से, सुति रह बाबू अपने से।

५. आव रे गुदी चिरैया, बाबू के खेला जो,
सोने तोरे ओठ भरब, गोड़े पैजनिया,
खाँड़ा रोटी रोज देहब टिकरी महीनवाँ,
तोर बचवा जुग-जुग जीओ, बचवा सुता जो।

यहाँ पक्षियों के साथ मानव का मधुर भावात्मक सम्बन्ध दिखाया गया है। बच्चे इस गीत को सुनकर फुलकित हो उठते हैं।

छोटे बच्चों के खेल-गीतः

चिड़िया गीत -

बन के चिरइया बन खोतवा लगाय
हमर बाबू जाले रखवार
फुआ सोहागिन खायेकवा लेके जाय
फुआ बीचहि में खास
हमार बाबू गइले रिसिआय
अमा सोहागिन दहली लुलुआय
इया सोहागिन ह्रदया लगाय।

भोजन खिलाते समय जब इ स मर्मस्पर्शी गीत को सुनाया जाता है तब बच्चा बिना आना-कानी किये भोजन करने लगता है।

बन के चिरइया बन डुगरल जाय
भर झोरा भूजा लेके बाबू खेले जाय
दे दे बाबू भूख लागल बा
जाये के दूर होता बड़ी देर।

Content given by BHU, Varanasi
Copyright © Banaras Hindu University- All rights reserved. No part of this may be reproduced or transmitted in any form or by any means, electronic or mechanical, including photocopy, recording or by any information storage and retrieval system, without prior permission in writing.

भोजपुरी लोक साहित्य एवं संस्कृति

बच्चों की यह स्वाभाविक प्रवृत्ति है कि वे खाते समय अपने पास बैठे बिल्ली कुत्तों को भी अपनी थाली में खाने के लिए आमंत्रित करने लगते हैं। देखा जाता है कि एक ही थाली में बच्चा और बिल्ली-कुत्ते सभी खा रहे हैं। बच्चे की अबोधता को मानवेतर जीव भी बड़ी सहजता से पहचान लेते हैं। यहाँ बच्चा खाने में आनाकानी कर रहा है, अतः मानवी भाषा में बोलते एक पक्षी से भूजा खाते बच्चे की सरस गीत सुनायी गयी है जिससे वह भोजन कर ले।

चिलरी गीत :

अरर-मरर पुआ पकनी, चिलरी के खोइंछा में नचनी।
आव रे चिलरी खेत खरिहान, भर सूप देबहु खेसारी धान।
ओही धनवाँ के चिउरा कुटइहे, चिउरा कुटइहे, वभना बोलइहे।
बभना के धीया-पूता, भइल हरखितवा।
जीउ हो मुन्ना बाबू लाख बरीसवा।

कृषक जीवन, मानवेतर प्राणियों से प्रेम, तथा ब्राह्मण भोज देने के सामाजिक रिवाजों को प्रदर्शित करते इस गीत को दादियाँ सस्वर गाकर बच्चों को लुभा लेती हैं। चिलरी एक तरह की चिड़िया है, नचनी माथे के बाल में पैदा होने वाला एक बहुत छोटा जीव है, और खेसारी एक तरह का दलिहन है।

मामा गीत :

एक तरेंगन, दू तरेंगन, मैना रे गोपाल
हर बहे डग-डग माटी के ढकना, हम ना जइबे मामू के अंगना।
मामू के धीया-पूता बड़ बदमास, धइल टंगरी, ले गइल बाजार।
उँहा से हम गंगाजी गइनी, गंगा से बालू लइनी
ऊबालू गोंड़वा के दहलीं, गोंड़वा भूजा देहलख।
ऊभूजा चरवहा के दहलीं, चरवहा घास देहलख।
ऊघास गइया खइलख, गइया दूध देहलख।
ऊदूध बिलइया पीअलख, बिलइया एगो मूसा देहलख।
ऊमूसा चिल्होरवा लेहलख, चिल्होरिया एगो पाँख देहलख।
ऊपाँख राजा लेहलख, राजा एगो हाथी देहलख।
ऊहाथी मामा लेहलख, मामा कानी कउड़ियों ना देहलख।

मातायें इस गीत को प्रायः तभी सुनाती हैं, जब बच्चा देर तक प्रयास के बावजूद नहीं सोता, या कभी-कभी स्वयं मातायें या दादियाँ फुरसत में रहती हैं। बच्चे की शिकायत है कि उसने राजा से जो हाथी प्राप्त किया उसे मामा ने मुफ्त में ही ले लिया। इस गीत में खेत जुताई, प्राकृतिक उपादानों तथा मानव एवं मानवेतर प्राणियों के बीच सदा से रहे आत्मीय सम्बन्धों पर एक रोचक कहानी गढ़ी गयी है। इस गीत को बच्चे बड़ी उत्सुकता के साथ सुनते हैं।

चन्दा मामा गीत :

Content given by BHU, Varanasi
Copyright © Banaras Hindu University- All rights reserved. No part of this may be reproduced or transmitted in any form or by any means, electronic or mechanical, including photocopy, recording or by any information storage and retrieval system, without prior permission in writing.

भोजपुरी लोक साहित्य एवं संस्कृति

चन्दा मामा दूर के, पुआ पकावे लूर से
अपने खाये थाली में, मुन्ना के दहले प्याली में
थाली गइल फूट, मुन्ना गइल रूठ।

रूठे हुए बच्चे को मनाकर खिलाने के लिए ये गीत गाये जाते हैं। यहाँ चन्दा का मानवीयकरण किया गया है। ग्रामीण बच्चे चन्दा की आकर्षक छवि को देखकर उसे मामा कहते हैं।

चन्दा मामा आरे आवऽ पारे आवऽ
नदिया किनारे आवऽ
दूध भात ले ले आवऽ
बबुआ के मुँहवा में गुटुक।

चन्दामामा की परछायी जल में दीखती है, माँ जब इस गीत को गाती है तो बच्चा समझ लेता है कि माँ ने चन्दा को बुला दिया है, चन्दा के श्वेत स्वरूप से दूध के रंग का साम्य बैठता है, उनसे दूध भात माँगा जा रहा है, बच्चे के आगे मातायें दूध भात रखकर ही ऐसा गीत गाती हैं। बच्चा यह समझकर कि चन्दामामा ने ही उसके लिए दूध भात भेजा है, खाने लगता है। बच्चे के उचित पोषण के लिए दूध अत्यधिक आवश्यक है।

रामजी के चिरइ रामजी के खेत, खाले चिरई भर-भर पेट।

ईश्वर निर्मित यह संसार फसल के खेत के समान ही है और मानवरूपी पक्षी उस खेत के फसल को चूँगने वाले जीव हैं।

चान मामा चान मामा, हँसुआ दऽ
ऊ हँसुआ काहे के? खरई कटावे के।
ऊ खरई काहे के? गइया के खाये के।
ऊ गइया काहे के? दूधवा दुहाये के।
ऊ दूधवा काहे के? भउजी के पीये के।
ऊ भउजी काहे के? बेटवा बिआये के।

बच्चे को हँसाने-खेलाने के लिए निर्मित इस गीत में मानव और प्रकृति के बीच का भावात्मक सम्बन्ध प्रदर्शित है साथ ही बच्चों की तरह गर्भवती स्त्रियों के लिए दूध की आवश्यकता को भी स्पष्ट किया गया है।

बढ़ई गीत :

एक बार एक चिड़िया अपने झुण्ड के साथ उड़ते हुए चने के एक खेत में गई। किसान के आने पर अन्य सभी चिड़ियाँ बिना दाना चूगे उड़ गईं, किन्तु वह किसी प्रकार एक चना अपनी ठोढ़ में लेकर आ सकी। उसे दो दल करने के लिए उसने जांता में डाल दिया, किन्तु वह चना, जांत के फटे कील/खूंटें में अंटक गया और काफी प्रयास के बाद भी नहीं निकला; तब उक्त चिड़िया बढ़ई के पास गई फिर आगे क्या हुआ, देखें निम्नलिखित पद्य में -

बढ़ई-बढ़ई तू खूँटा चीरऽ
खूंटा में मोर दाल बा
का खाऊँ का पिऊँ कहाँ ले परदेस जाऊँ?

Content given by BHU, Varanasi
Copyright © Banaras Hindu University- All rights reserved. No part of this may be reproduced or transmitted in any form or by any means, electronic or mechanical, including photocopy, recording or by any information storage and retrieval system, without prior permission in writing.

भोजपुरी लोक साहित्य एवं संस्कृति

बढ़ई ने उत्तर दिया- तुम्हारे एक दाल के लिए मैं खूंटा चीरने जाऊँ? जाओ मेरे पास समय नहीं है, इसके बाद वह चिड़िया लोहार के पास गई-

लोहार-लोहर तू बढ़ई डॉटऽ
बढ़ई ना खूँटा चीरे
खूँटा में मोर दाल बा
का खाऊँ का पिऊँ कहाँ ले परदेस जाऊँ?

लोहार के इनकार के बाद वह चिड़िया राजा के पास गई-

राजा-राजा तू बढ़ई डाँटऽ
बढ़ई ना खूँटा चिरे, खूँटा में मोर दाल बा...

राजा के बाद वह रानी के पास गई -

रानी, रानी तू राज बुझावऽ (राजा के समझावऽ)
राजा ना बढ़ई डाँटे
बढ़ई ना खूँटा चीरे, खूंटा में मोर दाल बा...

रानी के भी इनकार करने पर वह चिड़िया सर्प के पास गई-

सरप-सरप तू रानी डंसऽ
रानी ना राजा बुझावे
राजा ना बढ़ई डाँटे
बढ़ई ना खूँटा चीरे, खूँटा में मोर दाल बा...

सर्प के भी इनकार करने पर वह चिड़िया लाठी के पास गई फिर अन्त में अग्नि के पास गई। अग्नि ने चिड़िया की प्रार्थना सुनी और लाठी को जलाने के लिए अपनी लपट फैलायी। फिर लाठी ने सर्प को एवं सर्प ने रानी को, रानी ने राजा को, राजा ने लोहार को और लोहार ने बढ़ई को धमकाया; तब बढ़ई ने आकर खूँटा से चने का दाल बाहर निकाला।

इस कथात्मक गीत को सुनाते समय दादी माँ बच्चे को यही संदेश देना चाहती है कि अपने लक्ष्य को पाने के लिए उक्त चिड़िया की तरह मनुष्य को भी प्रयत्नशील होना चाहिए और कठिन से कठिन परिस्थिति में भी धैर्य नहीं छोड़ना चाहिए। यह गीत ५ से १० साल तक के बच्चे अधिक रुचि के साथ सुनते हैं, इसे सुनकर उनके मन में चिड़िया के संघर्ष के प्रति बहुत गहरी सहानुभूति जगती है और वे अग्नि की प्रशंसा करते हैं। उन्हें यह भी सीख मिलती है कि जीवन में कभी हार नहीं माननी चाहिए, कोई न कोई सहायता करने वाला अवश्य मिल जाता है।

हँसुआ गीत

रामजी-रामजी हँसुआ पइलीं
उ हँसुआ काहे के? खरवा कटावे के।
उ खरवा काहे के? बंगला छवावे के।

Content given by BHU, Varanasi
Copyright © Banaras Hindu University- All rights reserved. No part of this may be reproduced or transmitted in any form or by any means, electronic or mechanical, including photocopy, recording or by any information storage and retrieval system, without prior permission in writing.

भोजपुरी लोक साहित्य एवं संस्कृति

उ बंगला काहे के? गोरखा ढुकावे के।
उ गोरखा काहे के? चोतावा पुरावे के।
उ चोतवा काहे के? अँगना लिपावे के।
उ अँगना काहे के? गहुँआ सुखावे के।
उ गहुँआ काहे के? अटवा पिसावे के।
उ अटवा काहे के? पूड़िया पकावे के।
उ पूड़िया काहे के? भउजी के खाये के।
उ भउजी काहे के? बेटवा बिआये के।
उ बेटवा काहे के? टाल गोली खेले के।
टाल गोली टूट गइल, बबुआ रूठ गइल।

कुम्हड़ा गीत : (हास्य)

दाइ-दाइ एगो कोहड़ा दऽ,
ले जइबू कइसे? 'डगराइत-डगराइत'
चिरबू कइसे, 'चर-चर'
निर्हबू कइसे?, 'डुबुर-डुबुर'',
खइबू कइसे? ''गुबुर-गुबुर'',
सुतबू कहाँ?, ''चुल्ही के दुआरी'',
ओढ़बू कथी?, ''सूप''
''देखऽ बिलाई के रूआ''।

गोलाकार वजनी कुम्हड़ा झमड़े पर फैलकर फलने वाला एक प्रकार की सब्जी है। उसके बहाने ''दाई तथा किसी स्त्री'' के बीच मजाकिया वार्तालाप कराया गया है।

ओका-बोका गीत :

ओका-बोका तीन तरोका,
लउआ लाठी चचन काठी,
चनवा के नाव का?, 'रघुआ',
खाले का? 'दूधभात',
सुतेले कहाँ? 'पकवा इनार में',
ओढ़ेले का?, 'सूप',
देखऽ 'बिलायी के रूआ'।

बच्चे अपने पंजे को केकड़े के पैर का शक्ल बनाकर एक जगह रखते हैं। कोई लड़का उन पंजों की गिनती करता है। गिनती में जिस पंजे पर सूप आता है वह बिलायी की संज्ञा प्राप्त करता है।

अटकन-चटकन :

Content given by BHU, Varanasi
Copyright © Banaras Hindu University- All rights reserved. No part of this may be reproduced or transmitted in any form or by any means, electronic or mechanical, including photocopy, recording or by any information storage and retrieval system, without prior permission in writing.

भोजपुरी लोक साहित्य एवं संस्कृति

अटकन-चटकन दही चटाकन,
बन फूले बनइला, सावन में करइला,
सावन गइले चोरी, धर कान ममोरी

चिंउटी गीत :

चिंउटी हो चिंउटी!
चिंउटी के झगरा, छोड़इहे रे चिंउटी,
चिंउटी गइली चोरी, धर कान ममोरी।

ये दोनों गीत प्रायः एक ही तरह के हैं। बच्चे एक जगह बैठकर एक दूसरे का कान पकड़ कर इस तरह के गीत गाया करते हैं।

बच्चे पैर का अँगूठा पकड़कर गाते हैं -

राजा के रजइया, भैया के दुपट्टा,
घींच मार-घींच मार, मुसरी के बच्चा,
तार काटे तरकुल काटे, काटे रे बन खाजा,
हाथिया के घुघुआ लटकि अइले राजा।

दो तीन शिशु एक जगह आमने-सामने बैठकर एक दूसरे का कान पकड़ते हैं और झूम-झूम कर गाते हैं -

चिंउटा हो चिंउटा,
मामा के घइलवा काहें फोरलऽ हो चिंउटा। (घइलवा उ घड़ा)

खेल मनोरंजन :

१. चिउंटी हो चिउंटी, मामा के घइलवा काहे फोरलू हो चिउंटी।
२. हे काने सूई, हो काने डोरा फुदुक।
३. के जाई रूसे?
४. रामजी के चिरई रामजी के खेत, खाले चिरई भर भर पेट।
५. बबुआ गइले कलकत्ता, उपर से बम गिरल, बुबुआ लापाता।
६. ढिमिरी ढिमिरी ढिंग, बकरी के तीन टांग, फट।
७. थूक-थूकारी चल सवा सेर के बरारी।
चकवा चकई खेल
(हाथ जोड़कर नाचने का खेल)
चक डोले चक महल डोले, खैरा पीपर कभी ना डोले।

किशोर /किशोरियों के खेल गीत :

Content given by BHU, Varanasi
Copyright © Banaras Hindu University- All rights reserved. No part of this may be reproduced or transmitted in any form or by any means, electronic or mechanical, including photocopy, recording or by any information storage and retrieval system, without prior permission in writing.

भोजपुरी लोक साहित्य एवं संस्कृति

वर्षा गीत :

जब वर्षा नहीं होती, फसल सूखने लगते हैं और अकाल पड़ने की आशंका रहती है तब ग्रामीण लड़के गाँवों में घूम-घूम कर दरवाजे-दरवाजे पानी गिराकर उसमें लोटते हैं। विश्वास है कि इससे वर्षा के देवता इन्द्र खुश होकर पानी बरसाते हैं। इस अवसर पर गाया जाने वाला गीत -

हाली-हाली बरखऽ इनर देवता, पानी बिना परल अकाल हो राम।
चॅवर सूखल चॉचर सूखल, सूखल भइया के धान हो राम।

बच्चे यह तुकबन्दी भी गाते हैं-

एक पइसा के हरदी बूनी बरसो जलदी।
एक मुट्ठी सरसो, झमर-झमर बरसो।

कभी-कभी जब अतिवृष्टि होने लगती है और लोग उससे उबने लगते हैं तब बच्चे निम्नलिखित तुकबन्दी गाते हैं -

आइल बूनी बरखा बिलाई ब के चरखा।
एक पइसा के लाई महावीर के चढ़ाई बरखा ओन्हई बिलाई।

यहाँ ''चरखा लगना'' मुहावरा है, अर्थ है - बेचैनी, परेशानी।

राजा धुधुका :

बहुत से लड़के परस्पर हाथ पकड़कर पंक्ति में खड़ा हो जाते हैं। एक किनारे का लड़का दूसरे किनारे के लड़के से प्रश्न करता है, फिर प्रश्नोत्तर का क्रम जो चलता है, वह इस प्रकार होता है -

हे राजा! का पाजा? (काउ क्या, पाजाउ प्रजा)
खेत केतना? 'बिगहा पच्चीस'
मोर पिछुअरवा के घुमेला? 'राजा के सिपाही'
राजा का मंगलेहंऽ? 'इक्री-बिक्री केवल के फूल',
राजा कहें कि बतिये तूर,
राजा से कह दीहऽ, अभी फुलाइले बा।

इसके बाद उत्तर पाने वाले लड़का का अन्य लड़कों का हाथ पकड़े हुए दूसरे छोर के दो लड़कों के बीच से निकलन्ो का प्रयास करता है, फिर धक्का-मुक्की होती है, एक भागता है, शेष पकड़ने दौड़ते हैं।

उदुक-बुदुक :

उदुक-बुदुक तमा सलाइ, तमा फूटे रहन जाई,

Content given by BHU, Varanasi
Copyright © Banaras Hindu University- All rights reserved. No part of this may be reproduced or transmitted in any form or by any means, electronic or mechanical, including photocopy, recording or by any information storage and retrieval system, without prior permission in writing.

भोजपुरी लोक साहित्य एवं संस्कृति

कस्सा तेल, मजीर के बत्ती, सीख सदर, पानी के बदर, भेम रची, फुच्ची।

दस संख्यावाची इस गीत से कोई स्पष्ट अर्थ नहीं निकलता, पर बच्चों के खेल में इसका महत्वपूर्ण स्थान है। इस गीत को गाते समय बहुत से किशोर एक-दूसरे का हाथ जोड़कर पंक्तिबद्ध खड़े रहते हैं। उदुक-बुदुक से लेकर फुच्ची, अर्थात् दसवें संख्या तक वाले साधु होते हैं। पंक्ति में कम या अधिक बच्चों के होने पर इस गिनती को पुनः दुहराया जाता है, फुच्ची के बाद वाला लड़का चोर होता है, फिर खेल शुरूहोती है, वह चोर अन्य लड़कों का पीछा करता है, खड़े किसी लड़के को छू देने पर उसकी चोर संज्ञा स्पर्श किये गये लड़के को मिल जाती है। फिर उस नये चोर को सभी लड़के - ''फलां (नाम रखकर) चोर, लकड़ी बिन-बिन करे अँजोर'' कहकर भागते हैं और वह चोर लड़का पीछा करता है।

म्याऊँ-म्याऊँः

अर्द्धवृत्ताकार खड़े लड़कों में एक किनारे के लड़के से दूसरे किनारे के लड़के के बीच प्रश्नोत्तर होता है -

तहार घोड़ी का खाले?, ''घास खाले घसूमर खाले,
तितिली के छाल खाले'', बुलबुलायीं कि जाई? ''जाईं''।

तब फिर प्रश्नकर्त्ता अन्य लड़कों का हाथ जुड़ाये अन्तिम दो लड़कों के जुड़े हाथ के नीचे से निकलता है और घोराबन्दी होती है। घेरे के बीच वाला लड़का अन्य लड़कों का पीछा करता है।

गोइयां बरे :

यह खेल भी लगभग उपर्युक्त दो खेलों की तरह ही है। वृत्ताकार बैठे लड़कों के केन्द्र में एक, और एक बाहर खड़ा रहता है। बाहर वाला खंखारता है, तब फिर दोनों में प्रश्नोत्तर होता है -

हमरा बारी के खंखारे? ''राजा कोतवाल'',
राजा का मंगलेहं?
''अकन चाउर बकन चाउर, मंगले ह सबूजवा आम'',
''नइखे'', कोठिला झारऽ।

इतना कहने पर सारे लड़के कोतवाल का पीछा करने दौड़ते हैं

इन खेल गीतों से सामाजिक रीति-रिवाज आदि का पता तो लगता ही है, साथ ही ठेठ ग्रामीण शब्दों की भी जानकारी मिलती है, जिनमें समाज का बिम्ब जीवन्त है।

इन खेल-गीतों के अतिरिक्त अब भी गाँवों में जो खेल प्रचलित हैं, वे निम्नलिखित हैं। इनमें प्रायः गीतों के विधान नहीं पाये जाते या पाये जाते भी हैं तो हमारे संग्रह में नहीं आ सके हैं -

Content given by BHU, Varanasi
Copyright © Banaras Hindu University- All rights reserved. No part of this may be reproduced or transmitted in any form or by any means, electronic or mechanical, including photocopy, recording or by any information storage and retrieval system, without prior permission in writing.

भोजपुरी लोक साहित्य एवं संस्कृति

अटक-बटक :

खेल का बोल - अटक, बटक, बेल, बिच्छी, हड्डी, सुस्ती, जमुना

खपड़े की गोल चप्पी को एक पैर पर खड़ा होकर एक ही पैर के पंजे से मारते हुए अटक से लेकर बेल तक आते हैं। बीच्छी में पैर नहीं पड़ेगा, उछल कर हड्डी में जाना है। पुनः एक पैर से चप्पी को मारकर सुस्ती में जाना है और वहीं दोनों पैर रखकर सुस्ताना है। पुनः लंगड़ा बनकर जुमना में जाते हैं और अब उल्टा लौटते हैं। इस खेल में खास बात एक पैर का व्यायाम है। लंगड़ा पैर नीचे नहीं आने पर जीत मानी जाती है। जीतने वाला जमुना में खड़ा होकर आँख मूँदकर पीछे की ओर चप्पी फेंकता है। इस खेल को प्रायः बच्चियाँ खेला करती हैं।

बगछू-बगछू :

इस खेल में भी लंगड़ा होकर, अर्थात एक पैर से चप्पी मारते चलना है। विशेषता यह है कि एक ही श्वाँस में पूरे कोठे को पार करना है। रुकने का स्थान सुस्ती है। सुस्ती से शुरूहोकर लंगड़े पैर सुस्ती में ही आना है। यह खेल भी प्रायः बच्चियों का है।

कित-किती :

लंगड़ा होकर एक पैर से चप्पी मारते और कितकिती बोलते हुए कोठा एक से शुरूकर सुस्ती में आना है। सुस्सी में दोनों पैर रखकर आराम करना है। यह खेल भी बच्चियों का है।

बिच्छी :

किसी भी लड़के को राय से बिच्छी बना दिया जाता है। उसके नाक पर बाल रगड़ कर उसे बिच्छी का तमगा दे दिया जाता है। उसके हाथ में एक डंडा रहता है। वह डंडा लेकर अन्य लड़कों का पीछा करता है, शेष भागते हैं। जो लड़का बिच्छी का नाक छू देगा, उसे बिच्छी नहीं मारेगी।

भेंड़ा खेल :

अइहऽ हो भेंडा मामा, तहरा खेत में गोरु पड़ल बाड़े सन।

बालू के ढेर पर बैठकर लड़के अंजुरी में बालू लेकर अंगुलियों को ढीला कर बालू गिराते हैं और उपर्युक्त पंक्ति बोलते हैं। भेंड़ा बालू का एक प्रकार का कीड़ा है। उस कीड़े के मिल जाने पर उसे अंजुरी में बालू सहित लेकर बच्चे खेलाते हैं। यह खेल ज्यादे रेतीले स्थानों, यथा नदी किनारे होता है, जहाँ बच्चे बकरी या भेंड चराने जाते हैं।

Content given by BHU, Varanasi
Copyright © Banaras Hindu University- All rights reserved. No part of this may be reproduced or transmitted in any form or by any means, electronic or mechanical, including photocopy, recording or by any information storage and retrieval system, without prior permission in writing.

भोजपुरी लोक साहित्य एवं संस्कृति

पंचगोटिया :

खपड़े की पाँच चप्पी तर-ऊपर सजा दिया जाता है। लड़कों का दो समूह होता है। एक समूह का कोई लड़का एक निश्चित स्थान से इस चप्पी पर गेंद फेंकता है। दूसरे समूह वाले उस गेंद को रोकने का प्रयास करते हैं। यह क्रिकेट खेल जैसा ही होता है। गेंद से लगकर यदि चप्पी (गोटी) गिर जायेगी तो चप्पी गिराने वाला समूह विपक्ष से अपना बचाव करते हुए उस चप्पी को पुनः सीधा करने का और विपक्ष समूह गेंद लेकर उस पर चलाने का प्रयास करेगा। विपक्ष से बचकर चप्पी सीधा कर देने पर उसे गिराने वाला समूह विजयी होगा और खेल जारी रखेगा। चप्पी पर बिना लगे गेंद को पकड़ लेने अथवा चप्पी गिराने वाले समूह पर गेंद से प्रहार कर देने वाले समूह को खेलने का मौका मिल जाता है।

कबड्डी :

अदल-गदल घोड़ कुदौवल, महानदी पाँव पिये,
रेशम जोगी राजा, इरिच मिरिच मिरचाई के पत्ता,
चल कबड्डी आल-ताल, घुंघुरी घोड़े के नाल
मर गइले जवाहर लाल, जिनकर मोछिया लाले लाल, लाले लाल।
कबडेन डेना-कबड़ेन डेना, हनुमान के बच्चा तीन जना।

कबड्डी कहकर दौड़ने वाला लड़का अपने को हनुमान का बच्चा कहकर ''बलशाली होने का'' धौंस दिखा रहा है। हनुमान के तीन लड़के नहीं, माना जाता है कि एक ''मकरध्वज'' थे, जो अहिरावण के अंगरक्षक थे।

कबड़ी कबड्डुआ, बाप तोर नेटुआ
माई तोर डाइन, कतेक दूर जायीं?

इस कबड्डी गीत में दूसरे दल के लड़के को माता के डाइन (जादू-टोना करने वाली औरत) और बाप को नट बता कर पकड़ने की चुनौती दी गई है।

१. ए बनवारी खोलऽ केवारी, तहरा घर में लहँगा सारी।
२. चल कबडिया आरा, सनतावन गोली मारा
कोई नाम लिया हमारा, कोई नाम लिया हमारा।
३. उजर बकरी चितरी कान, चलबे बकरी पुरबी बान?
४. चल कबड्डी आवऽतानी, तबला घुड़कावऽतानी
तबला के पइसा, ले चल बगइचा।
५. कबड्डी आइले, तबला बजाइले
तबला के पइसा लाल बगइचा, मन्नू धोबी अहिर के बच्चा।
६. एक मुट्ठी गरई छल-छल करई, कवनो वीर हमार गट्टा ना धरई।
७. आवऽतानी कबड्डी डेरइह मति हो, हाथ गोड़ टूटी कपार जनि फूटी।
८. कबड्डी में लबदी पताल घर भुआ, मालिन बिटिया खेलेली जुआ, खेलेली जुआ...।
९. चल कबडिया आरा, सुलतानगंज में मारा, कोई नाम लिया हमारा।
१०. तीसी-तेल बबुर के लासा, लासा ऊपर तीर कमान

Content given by BHU, Varanasi
Copyright © Banaras Hindu University- All rights reserved. No part of this may be reproduced or transmitted in any form or by any means, electronic or mechanical, including photocopy, recording or by any information storage and retrieval system, without prior permission in writing.

भोजपुरी लोक साहित्य एवं संस्कृति

कबड्डी खेलो पक्का जवान, पक्का जवान...।
११. एक कौड़ी एल बेल, मारे कौड़ी फूटे बेल,
कौड़ी झनक बेल, कौड़ी झनक बेल, ...।
१२. चल कबड्डी बारह बजी...।
१३. आम छू आम छू, चिनिया बादाम छू।
१४. घो-घो रानी, कितना पानी।
१५. तीसी तेल बबुर के छत्ता ,छत्ता ऊपर तीर कमान
कबड्डी खेले पक्का जवान, पक्का जवान...।

दोल्हापाती, थाड़ी-टीका, झूला, सत लकड़िया, बिच्छी, पचगोटिया, बिलाई-छानल, डंडा-पेस, गुलबाजी, सोलह-गोटिया आदि, ये साहसिक और परिश्रमयुक्त खेल हैं। बेटा-बेटी और घो-घो रानी (नदी या पोखरे में स्नान करते समय के खेल) तथा तिलवा-तिलई, अंजोरिया में घीव-खिचड़ी, आँख-मुन्नौवल, चकवा-चकई, कनझिट्टो, माटी-माटी, थ्री-सिक्स, लट्टू, अलद-गदल, इरिच-मिरिच, जूटमार (कौड़ी), गुल्ली-डण्डा, टीसो (शीशे की गोली से खेल), सींकगरी (डुगरौना), घरौंदा, बुढ़िया-रेड्डी, कित-किती, बगछू-बगछू, भंटा-लुकौवल, गबदहिया-लदान, भेंड़ा-खेल, थापा, हाड़ा-बिछी, लंगडी, गम्हार, राजा-धुधका आदि कम परिश्रम पर बुद्धि-चातुर्ययुक्त खेल हैं।

पुराने खेल जिनमें प्रायः अधिकांश आज लुप्त हो चुके हैं, इस प्रकार हैं -

ढइया-ढेकार, पक्की गुलेर, चिल्होरिया-कटोरिया, संतर-पउअल, तिलवा-तिलई, गोइयाँ-चढ़मार, छौंकी-चित्त, गपटाइ-छटाई, बेलफार, गदीना, बीबी-खेल, लाल-लाल खेल, केमचा, आदि।

इस तरह के सैकड़ों खेल ग्राम्य जगत में प्रचलित हैं। आज जबकि जीवन में खेल को बहुत महत्व दिया जा रहा है, प्राचीन ग्रामीण खेलों को उपेक्षित किया जाना, उनके विकास के विषय में न सोचा जाना दुःखद है। धीरे-धीरे इन खेल-गीतों के साथ हमारी खेल संस्कृति भी धूमिल पड़ती जा रही है। आज ग्राम्य जीवन पर शोध भी हो रहे हैं, पर उनमें मौलिकता का अभाव दीखता है, क्योंकि कोई परिश्रम करना नहीं चाहता। आवश्यकता है, शोधार्थी गाँवों में घूम-घूमकर, पूछ-ताछ कर इन चीजों को एकत्रित करें और उनकी उपयोगिता का विश्लेषण करें।

थाड़ी टीका :

यह खेल युवाओं का है। इसे खुले मैदान में खेला जाता है। इ समें दो समूह होता है। एक स्थान पर एक मोटी रेखा खींच दी जाती है। उस रेखा के दोनों ओर दोनों समूह खड़ा हो जाता है। एक-एक कर दोनों ओर से एक-एक युवक परस्पर हाथ मिलाते हैं और अपनी ओर खींचते हैं। इसमें पैर से परस्पर लंगड़ी मारने और अपनी ओर खींच लेने का प्रयास किया जाता है। खींच लेने वाला विजेता होता है। यह शारीरिक व्यायाम वाला एक महत्वपूर्ण खेल है। इसमें धूल से परहेज नहीं की जाती।

पारी/टॉस जीतने के लिए :

किसी एक पक्ष का कैप्टेन लड़का अपनी दोनों मुट्ठी बांधकर आगे करता है, एक मुट्ठी में केंकड-पत्थर रहता है, जिसे बिना दिखाये रखा गया होता है, मुट्ठी आगे कर वह बोलता है -

Content given by BHU, Varanasi
Copyright © Banaras Hindu University- All rights reserved. No part of this may be reproduced or transmitted in any form or by any means, electronic or mechanical, including photocopy, recording or by any information storage and retrieval system, without prior permission in writing.

भोजपुरी लोक साहित्य एवं संस्कृति

आंकड़ गोटी पाकल पान, खोल दे मुट्ठी पहलवान। (आंकड़उकेंकड़)

दूसरे पक्ष का कैप्टेन लड़का अपने अनुमान से केंकड़ वाली मुट्ठी की ओर संकेत करता है। यदि उसका अनुमान सही हुआ, तो खेल की पारी उसकी। अन्यथा मुट्ठी बाँधने वाले पक्ष की। आधुनिक खेलों की भाषा में इसे टॉस जीतना भी कह सकते हैं।

हास्य व्यंग्य :

वृद्ध/वृद्धा पर -

१. 'बुढ़वा बेइमान माँगे करइला के चोखा'
२. इ बुढ़िया जहर के पूड़िया, ना माने मोर बतिया रे।
पक्की सड़क पर मोटर दउड़ावे, बइठल देखावे बतिसिया रे।

दुलहा/दुलहन पर -

३. चलनी के चालल दुलहा, सूप के फटकारल हे।
४. कनिया हे, दूगो धनिया दऽ, लाल मिर्चा के फोरन दऽ
अपने खइलू पेड़ा, भतार के दहलू चेरा?

५. देहात में अभी भी डोली और पालकी पर नौसे (दुलहा) और कनिया को ढोने की प्रथा है। माना जाता है कि बड़े सौभाग्य से जिंदगी में एक बार कहरिये के केंधे पर चढ़ने का मौका मिलता है। कहार जब डोली में दुलहिन की विदाई कराकर गाँव से रास्ते गुजरता है तो बच्चे हँसी-मजाक में कहते हैं -

कनिया बहुरिया लाल गोदना, बरवा बोलावे चल अंगना।
रहर में रहरी हजार रहरी, डोली के कनिया हमार मेहरी।

गुरूजी पर -

६. पंडित जी पन डोल-डोल, पइसा मिले गोल-गोल।
७. पंडीजी-पंडीजी पाव लागिले, रउआ छोटकी पतोहिया के ले भागिले।
८. मिसिर करस घिसिर-घिसिर, वाणी हाथ कटारी
वाणी विलइया भागल जाले, मिसिर के महतारी।
ये लोग स्कूल के शिक्षक हैं, किसी कारणवश अपने विद्यार्थियों को डराते-धमकाते हैं तब लड़के इस तरह की व्यंग्योक्तियां छोड़ते हैं।
९. हे श्री सुपुता, आँख डेढ़, कान डेढ़, आंख काहे चुपता?

१. चाकू चना खेलीले, मजूर के चाउर छॉटीले।
छाँट -छाँट धरीले, भइया के खिआइले।
भइया गइले पटना, ले अइले ककना।
देखी ए आइ माई, भउजो के ककना।

Content given by BHU, Varanasi
Copyright © Banaras Hindu University- All rights reserved. No part of this may be reproduced or transmitted in any form or by any means, electronic or mechanical, including photocopy, recording or by any information storage and retrieval system, without prior permission in writing.

भोजपुरी लोक साहित्य एवं संस्कृति

२. दाल ददरी मरीच ददरी, बाबा पोखरिया में बड़ मछरी।

टिकोरे द्वारा मजाक :

कोल-कोलवांसी, भादो मासी
देखी तहार बिआह केन्ने होई?

दाग लगे हुए टिकोरे आम के बीज को चिटकी से दबाकर एक लड़का दूसरे को उपर्युक्त पदबन्ध द्वारा सम्बोधित करते हुए उछालता है। वह बीज जिस दिशा में गिरता है, मान लिया जाता है कि उसी दिशा में लड़के की शादी होगी।

किरिया उतारने का पदबन्ध :

बगुला-बगुला कहाँ जा तारे? ''मकई के खेत में'',
सेर भर सतुआ ले ले जो, गंगा में दहवले जो।
गंगा में के खूँटी-खाटी, लोहे के मचान,
सबकर किरिया उतरिहें भगवान।

Content given by BHU, Varanasi

Copyright © Banaras Hindu University- All rights reserved. No part of this may be reproduced or transmitted in any form or by any means, electronic or mechanical, including photocopy, recording or by any information storage and retrieval system, without prior permission in writing.